सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 नवम्बर)

भजन संहिता 141:3 हे यहोवा, मेरे मुख का पहरा बैठा, मेरे हाठों के द्वार की **रखवाली कर!**

जो चौकीदार या पहरेदार हमारी क्रियाओं और शब्दों पर अपने कर्त्तव्य को कर रहे हैं और पहरा देने को खड़े हैं, उनकी संख्या, उन पहरेदारों के अनुपात में कम होगी जो पंक्ति में खड़े होकर हमारे मनों या विचारों पर पहरा दे रहे हैं, क्योंकि, मनों या विचारों पर पहरा देने वाले चौकीदार एक मजबूत पहरेदार हैं। हमें विशेष रूप से यहाँ [अपनी क्रियाओं और शब्दों] पर सावधान रहने की जरूरत है। "क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके मुंह पर आता है" (लुका 6:45)। ये सामान्य सच्चाई विशेष रूप से दुबारा से उत्पन्न हुये लोगों यानि नई सृष्टि के लिये ज्यादा लागू होती है जो की अपने व्यवहार और बातों में, दूसरों की तुलना में ज्यादा निष्कपट हैं । हृदय में सही इरादे होने के बावजूद भी, ये उस भावना को व्यक्त करने के तरीके में कम सावधान हो जाते हैं, संभवतः पहले (बपतिस्मा लेने से पहले) की तुलना में, लेकिन इसके विपरीत उन्हें (पवित्र लोगों को) उस भावना को व्यक्त करने के तरीके में और भी अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है जैसा की प्रेरित ने याकूब 3:2 वचनों में उन्हें याद दिलाया है कि “जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है” । `Z. '04-23` R3305:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 नवम्बर)

1 शमूएल 3:18 वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने वही करे।

हमें ये पहचान नहीं है कि हमारा सर्वोत्तम कल्याण किसमें है। कभी-कभी हम जिन वस्तुओं की लालसा इस विचार से करते हैं की वे अच्छी हैं और उन्हें पाने का प्रयत्न करने करने की इच्छा करते हैं, वास्तव में उन वस्तुओं से हमारी हानि हो सकती है। धन्य हैं वे जो इस काबिल होते हैं कि हर परीक्षा और कठिनाई और व्याकुलता की उदासी को विश्वास के द्वारा बेध पाते हैं, और ये महसूस करते हैं कि "प्रभु अपनों को पहचानता है" (2 तीमुथियुस 2:19), और यह कि परमेश्वर ही उनके लिये सब बातों को मिलाकर भलाई ही को उत्पन्न करते हैं। [`Z. '01-148` R2806:4] हमें धीरज से यहोवा की बाट जोहनी है, और परमेश्वर की सुरक्षात्मक देखभाल के अंतर्गत जिन भी अनुभवों को हमारे लिये ठहराया गया है, उन्हें धीरज से परमेश्वर, केवल जिनसे हमारा नाता है, उनके ज्ञान, प्रेम, और शक्ति पर बिना कोई सवाल किये हुए स्वीकार करना है। ‘हमें केवल परमेश्वर से लेना देना है और किसी से कोई लेना देना नहीं है। आमीन `Z. '01-317` R2888:2

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 नवम्बर)

मत्ती 26:41 जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।

कुछ लोग 'सचेत' रहे बिना प्रार्थना करने की गलती करते हैं और दूसरे 'सचेत' रहते हुए भी प्रार्थना नहीं करने की गलती करते हैं; लेकिन सुरक्षित और सही तरीका केवल वो है, जिसे हमारे प्रभु यीशु ने दर्शाया है; दोनों को मिलाकर करना (यानि सचेत रहो और प्रार्थना करते रहो)। हमें सचेत रहते हुए दुनिया, शरीर और शैतान के सभी

आक्रमणों के खिलाफ पहरा देते रहना है। हमें सचेत रहते हुए प्रभु के सभी वचनों से मिलने वाले प्रोत्साहन को देखते रहना है, उन वचनों के पूरे होने के सबूत को देखते रहना है, उन चिन्हों को जो उनकी उपस्थिति के बारे में इशारा करते हैं, देखते रहना है और शीघ्र आनेवाले महान युगों के सभी परिवर्तनों को देखते रहना है। हमें पूरी सतर्कता से सभी वस्तुओं को देखते रहना है जो कि हमें विश्वास और आशा और वफ़ादारी और प्रेम में मजबूत करेंगी, और इनकी चौकसी करने के साथ - साथ हमें निरन्तर प्रार्थना भी करते जाना है। हमें परमेश्वर के लोग होने के नाते एक साथ मिलकर प्रार्थना करनी है; हमें अपने घरों में परिवार के साथ प्रार्थना करनी है; हमें गुप्त में, एकांत में भी प्रार्थना करनी है। `Z. '01-80` R2775:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 नवम्बर)

फिलिप्पियों 2:7 वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया...।

जिस प्रकार कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता और दोनों को संतुष्ट नहीं कर सकता, और दोनों के साथ न्याय से काम नहीं कर सकता, क्योंकि दोनों की रुचियों में विरोध रहता है, उसी प्रकार एक ही समय में हम परमेश्वर और धार्मिकता की सेवा करते हुए शैतान को प्रसन्न नहीं रख सकते और न ही शैतान के ग्रहणयोग्य बन सकते हैं, और न ही उन्हें खुश कर सकते हैं जो की वर्तमान युग में शाशन कर रहे '"इस संसार के सरदार" (यूहन्ना 14:30) से तालमेल रखते हैं। परमेश्वर के सभी समर्पण किये हुए लोगों को, जो स्वर्ग में धन इकठ्ठा करना चाहते हैं और परमेश्वर की दृष्टि में धनी बनना चाहते हैं (लुका 12:21), उन्हें जो लोग समर्पण नहीं किये हुए हैं यानि जो लोग चाहे किसी भी पेशे में हों, वास्तव में धन की, स्वार्थ की, और अभी के जीवन की सेवा करते हैं, और जिन्होंने अपनी इन

रुचियों को स्वर्गीय राज्य पाने के लिए बलिदान नहीं किया है, उनके बीच में समर्पित लोगों को शून्य बनकर रहने की इच्छा करनी होगी। `Z. '00-318` R2717:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 नवम्बर)

इब्रानियों 10:21,22 और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, परमेश्वर के समीप जाएं।

आइये हम याद रखें कि जिसने हममें अच्छा काम आरम्भ किया है वो कभी भी नहीं बदलते और ये भी याद रखें कि - यदि हमारे हृदय अभी भी उनके साथ तालमेल में हैं, और यदि महान प्रायश्चित के बलिदान पर हमें स्पष्ट और दृढ़ विश्वास है, यदि हमारा समर्पण अभी तक सम्पूर्ण और पूरा है, जिसकी वजह से हम सभी मामलों में अपनी इच्छा को नहीं ढूंढ़ते बल्कि चाहते हैं कि उनकी इच्छा पूरी हो, तब वास्तव में हमें विश्वास से भरा दृढ़ निश्चय हो सकता है, क्योंकि हम यह जानते हैं कि परमेश्वर कभी भी नहीं बदलते हैं, और हम ये भी जानते हैं कि अभी तक हम उन्हीं के वादों और सभी इंतज़ामों की रेखा के अंदर हैं, हमें पता है कि उनके सभी अनुग्रहों से से भरे प्रबंधों का प्रयोग अभी भी हमारी ओर ही किया जा रहा है। यही विश्वास से भरा दृढ़ निश्चय है - परमेश्वर पर पूरा भरोसा। `Z. '00-170` R2643:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 नवम्बर)

रोमियो 12:1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

हमारे पास जो भी है वो सब कुछ परमेश्वर की सेवा में दे देना, न केवल उचित है, बल्कि एक बहुत ही छोटी भेंट है - हम जो भेंट देना चाहते हैं उससे भी कम है, हमारे परमेश्वर को देने के लिए, जिन्होंने हमारे प्रति इतनी करुणा और अनुग्रह प्रगट की है । और यदि हमारे इस समर्पण के साथ कोई भी इनाम न जुड़े होते, तोभी हमें अपना सबकुछ भेंट चढ़ाने को उचित ही महसूस करना चाहिए था। लेकिन, क्योंकि परमेश्वर ने बहुत से महान इनाम और आशीषें भी जोड़ दी हैं, हमें न केवल ये महसूस करना चाहिए कि इसे अस्वीकार करना हमारी तरफ से दिव्य दया की कदर न करने का संकेत है, बल्कि ये हमारे मन की कमजोरी और निर्णय लेने की कमजोरी की ओर भी एक संकेत करता है, जो कि, 'कुछ थोड़े वर्षों की मनमानी के अस्थाई और क्षणभंगुर सुखों' और 'परमेश्वर के साथ अनंतकाल के आनंद और आशीषों और महिमा और उनसे तालमेल' के बीच में संतुलन नहीं कर पता । `Z. '00-170` R2642:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 नवम्बर)

प्रकाशितवाक्य 20:4...और उन की आत्माओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे ...।

हालाँकि ये 'सिर काटना' साधारण भाषा नहीं है, बल्कि एक चिन्ह वाली भाषा है, फिर भी यह गहरा महत्व रखती है··· ये न केवल स्वंय की इच्छा को मारने का प्रतीक है बल्कि बाकि सभी प्रधानों, सरकारों और कानून देनेवालों से भी कट जाने का प्रतीक है। इनके बदले में, जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया का सिर नियुक्त किया है, जो की प्रभु की देह है, इन्हें प्रभु यीशु को ही अपना सर मानना है। इसका मतलब न केवल संस्थाओं के प्रमुखों और अधिकारीयों से सम्पर्क काटना है, बल्कि अपनी इच्छा के बदले में प्रभु यीशु की इच्छा को करना है और खुद को शिरोमणि बनाने के बदले प्रभु यीशु को शिरोमणि स्वीकार करना है। ये वही विचार है, जिससे की प्रेरित रोमियो 6:3 वचन में हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं- वो यह निश्चयपूर्वक कहते हैं कि हम सब जिन्होंने यीशु मसीह के शरीर में बपतिस्मा लिया है, उनके शरीर के अंग होकर, एक ही सर के नीचे, जो की मसीह है, उनकी मृत्यु में बपतिस्मा लेकर, अपनी इच्छाओं का पूरा समर्पण करके, और अन्ततः पूरी तरह से अपने जीवन को न्यौछावर करते हुए, प्राण देनें तक विश्वासी रहना है। `Z. '00-285` R2700:6   आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 नवम्बर)

निर्गमन 20:7 तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना … ।

हालांकि ये आज्ञा आत्मिक इस्रालियों के लिए नहीं दी गयी है लेकिन हम आसानी से देख सकते हैं कि इस वचन की भावना हम (जो आत्मिक इस्राएली हैं) तक कैसे पहुँचती है … हमने मसीह के नाम को, अपने नाम के समान लिया है। हमारी गिनती मसीह के देह के सदस्यों में होती है। हमारे सिर (मसीह) का पवित्र नाम उनके शरीर के सभी सदस्यों (अंगो) का है। दुल्हे का सम्मानित नाम उनकी दुल्हन या मंगेतर का है। ये विचार ही हमें कितनी सतर्कता दे देता है, और हम खुद से

कितनी उचित रीती से कहते हैं कि:"मुझे जरूर से ये ध्यान रखना है कि, मैं अपने प्रभु का नाम व्यर्थ में न लूँ, - ताकि मैं अपने पद से जुड़े सम्मान, गरिमा और जिम्मेदारी के लिए खुद को दुनिया में उनका प्रतिनिधि और राजदूत समझ कर इस पद की सराहना करूँ। मुझे सावधानी पूर्वक चलना है और जहाँ तक हो सके यह प्रयत्न करना है की उस नाम पर कोई आंच न आए बल्कि इसके विपरीत, मैं हर विचार और शब्द और कर्म में इस नाम को आदर या सम्मान दे पाऊं"। `Z. '04-73` R3331:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 नवम्बर)

गलातियों 5:17 क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।

यहाँ बहुत ही बड़ी और नियमित होने वाली लड़ाई है। हालाँकि नया मन या नई इच्छा खुद पर अधिकार जताते हुए शरीर को नए मन के वश में रखता है और शरीर को नए मन की अधीनता में रहने के लिये मजबूर करता है, लेकिन फिर भी ये नश्वर शरीर जो असली में मरा हुआ नहीं है, फिर से बल प्राप्त करके नए मन का विद्रोह करने लगता है। ये नश्वर शरीर लगातार दुनिया और शत्रु के साथ संपर्क में आ रहा है। और ये नश्वर शरीर इनके संपर्क में आने के कारण लगातार दुनिया और शत्रु से प्रेरणा पा रहा है और फिर से जीवित हो जा रहा है। इसके कारण ये शरीर पुनर्जीवित होकर फिर से सांसारिक चिंता, महत्वकांक्षा, सांसारिक तरीकों, संघर्षों, विरोधों और अवज्ञायों के द्वारा नए मन का विरोध करने लगता है। कोई भी संत इन अनुभवों से अछूता नहीं है - बाहर लड़ाईयां हैं, भीतर क्लेश है। ये लड़ाई अंत तक लड़नी है नहीं तो हम जिस बड़े इनाम के लिए लड़ रहे हैं वो नहीं मिल पायेगा।

क्योंकि यद्यपि नई सृष्टि नश्वर शरीर की मालिक है और उसे लगातार परमेश्वर के अनुग्रह से बल देती है फिर भी इस संघर्ष कि समाप्ति मरते दम तक नहीं हो सकती है। `Z. '03-424` R3275:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 नवम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:6 प्रेम ... कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

क्या सही और गलत के सिद्धान्त दृढ़ता से मेरे मन में स्थिर हैं? और क्या मैं जो सही है उसके साथ अच्छी तरह से तालमेल में हूँ और जो गलत है क्या मैं उसका विरोध करता हूँ, इतना विरोध कि न केवल मैं गलत कार्यों को प्रोत्साहन न दूँ, बल्कि उन गलत कार्यों की निन्दा, तब भी करूँ जब उन कार्यों से मुझे लाभ हो? क्या मैं सच्चाई के अनुसार, जो सही है उसके साथ इतना तालमेल रखता हूँ कि मैं सच्चाई में आनन्दित रहने से खुद को न रोक सकूँ और न ही सच्चाई की समृद्धि को रोक सकूँ? यहाँ तक कि यदि सच्चाई मेरे पहले के ख्यालों को विचलित करती हो या मेरे सांसारिक हितों के लिए हानि लाती हो तब भी क्या मैं सच्चाई में आनन्दित रहने से खुद को नहीं रोक सकता हूँ? यहाँ के वचन में प्रेरित परमेश्वर के प्रेम की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे वे परमेश्वर के लोगों की आत्मा के रूप में बता रहें हैं, और परमेश्वर के लोगों में ये आत्मा प्रेम है जो कि स्वार्थ से बहुत ज्यादा ऊपर है, और स्थिर सिद्धान्तों पर आधारित है। और दिन-प्रतिदिन स्पष्ट रूप से प्रेम की इस आत्मा को परखा जा सकता है, और किसी भी किमत पर प्रेम की आत्मा का पालन करना चाहिए। `Z. '03-57` R3151:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 नवम्बर)

2 पतरस 1:5 और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्‌गुण, … बढ़ाते जाओ ।

परमेश्वर के लोगों के साथ एक सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि सही मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प करने के बाद भी और सभी प्रलोभनों पर काबू पाने का निश्चय करने के बाद भी, वे लोग पर्याप्त मात्रा में सकारात्मक कार्य नहीं करते हैं। बहुत से लोग प्रलोभक (लालच देने वाले, शैतान से) से यह कहते हैं कि इस बार में तुम्हारे दिये हुए प्रलोभन में नहीं फसूँगा और वहीं पर संपन्न कर देते हैं। ऐसा कह कर वे शैतान के दुबारा आने का एक अवसर अपने दिमाग में छोड़ देते हैं। हमारे प्रभु यीशु का मार्ग उचित था-- हमें शैतान को एक ही बार में हमेशा के लिए हटा देना चाहिये। हमें अपना कदम इतनी मजबूती से रखना चाहिये कि शैतान भी वापस आना फायदेमंद न समझे, जैसा की प्रभु यीशु ने मत्ती 4:10 वचनों में कहा था - "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर"।`Z. '04-10` R3299:6 आमीन ।

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 नवम्बर)

यूहन्ना 20:27 … अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।

परमेश्वर के करीब आना असंभव है सिवाय इसके कि हम परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा रखें, उनकी भलाई, उनके ज्ञान, उनकी शक्ति, उनके प्रेम, पर विश्वास और भरोसा रखें। विश्वास उन्नति का विषय है। वही प्रेरित जब गलीली के समुद्र के तूफ़ान में डर गए थे, जबकि प्रभु येशु मसीह उनके साथ थे, बाद में उनका विश्वास धीरे - धीरे इतना बढ़ गया, जैसा की हम पढ़ते हैं, की प्रभु यीशु कि अनुपस्थिति में भी वे दृढ़ता से सेवकाई करते रहे। उसी तरह हमारी रोज की जिन्दगी में हमें भी प्रतिदिन हमारे अन्दर विश्वास को पैदा करना चाहिए, परमेश्वर पर भरोसा को बढ़ाना चाहिए, और हमारे पुराने अनुभवों के ऊपर सोचना चाहिए और सभी शिक्षाओं जो परमेश्वर के वचन के द्वारा मिली है, उनका ध्यान करना चाहिए ताकि हमारा विश्वास अच्छी तरह से मजबूत जड़ पकड़ के स्थिर रहे। `Z. '04-89` R3338:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 नवम्बर)

मत्ती 6:8 तुम्हारा पिता ... जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है।

इसलिए हमारी विनती, प्रार्थनाएं, याचनाएं, जो कि हम परमेश्वर से करते हैं, वे - हृदय की पवित्रता के लिये, उनकी पवित्र आत्मा से हमें भरने के लिये, आत्मिक भोजन के लिये, ताजगी, मजबूती इत्यादि के लिये होनी चाहिये। क्योंकि हमारी नई सृष्टि के लिये बाकि प्राकृतिक जरूरतों के बारे में परमेश्वर जानते हैं, वे ये भी जानते हैं कि हमारी नई सृष्टि के लिये

सर्वोत्तम क्या है? हमारी अन्य जरूरतों को हमें परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिये - यदि हम उन वस्तुओं के लिये परमेश्वर से हठ करें जिन्हें उन्होंने हमें नहीं दिया है तो इससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होते हैं। ऐसा करना हमारा उनपर भरोसे और विश्वास को कम होते हुए दर्शाना है। बल्कि ऐसा करके हम यह दिखाते हैं कि हमें परमेश्वर पर शक है, हम अपने डर को प्रगट करते हैं, कि परमेश्वर हमारी जरूरतों को भूल गए हैं या उसकी उपेक्षा (सुध न लेना) कर रहे हैं और हम ये सोचते हैं कि उन्होंने जो वस्तुएँ देने का वादा किया था उसको वो भूल गये हैं।`Z. '04-90` R3338:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 नवम्बर)

प्रेरितों के काम 20:28-30 इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; ... फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे।

परमेश्वर की कलीसिया के सदस्यों के लिये ये आवश्यक है की उन्हें विपरीत प्रभावों, अनुभवों के वश में किया जाये जिससे की वे अनुशाशन में रह सकें, उनकी परीक्षाएं हों और वे खुद को अंतिम समय तक परखने में विश्वासी हों। क्योंकि सबसे बड़े पुरस्कार का हक़दार वही है जो इन परीक्षाओं पर जय पाता है। मसीह के साथ यदि हमें राज्य करना है, तो अवश्य है कि हम अपनी योग्यता को साबित करें - हमें वही परीक्षाएं देकर

जो हमारे प्रभु यीशु मसीह ने दी थी, परमेश्वर के प्रति अपनी वफ़ादारी को जांचना है, परमेश्वर के वचनों के प्रति अपनी वफ़ादारी को जांचना है, सच्चाई के प्रति अपने उत्साह को जांचना है, बदनामी और अत्याचारों के बीच में सहनशीलता के साथ धीरज से सहना है। अपने परमेश्वर के प्रति प्राण देने तक विश्वासी रहना है। हमारा दृढ़ भरोसा परमेश्वर की शक्ति और उनके उद्देश्य पर होना है, कि वे अपने निश्चित समय में अवश्य अपनी कलीसिया को छुड़ाएंगे और उसके पद को ऊँचा करेंगे। ऐसे ईमानदार विश्वासी सदस्यों के लिये ही भजन संहिता 91 के वचनों का धन्य आश्वासन है। `Z. '04-74` R3331:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 नवम्बर)

1 यूहन्ना 2:6 जो **कोई यह कहता है कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।**

हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह की तरह चलना है, हमारे सामान्य चाल-ढाल, आचरण, व्यवहार में हमें प्रभु यीशु मसीह की तरह बनना है, और हमारा सम्बन्ध केवल हर उस वस्तु से होना चाहिए जो अच्छी है, भली है और परिणामस्वरूप, हर वस्तु जो बुराई को उत्पन्न करती है उससे दूर रहना है। हमें जितना करीब से हो सके, बारीकी से प्रभु यीशु मसीह के पद चिन्हों पर चलना है। इसका मतलब ये नहीं है कि हमारी अपरिपूर्ण देह के साथ, हमलोग प्रभु यीशु मसीह की तरह परिपूर्ण तरीके से सारी सिद्धता के साथ चल पाएँगे क्योंकि हमारे प्रभु शरीर में भी परिपूर्ण मनुष्य थे।

प्रभु यीशु मसीह की तरह चलने का मतलब केवल यह है कि हमें सिर्फ वैसे चलना है जैसे प्रभु यीशु चले; उसी तरीके से, उन्हीं की दिशा में, और उन्हीं लक्ष्य और आदर्शों की ओर चलना है जो उन्होंने हमारे लिये स्थापित किये हैं। `Z. '03-345` R3237:5 आमीन ।

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 नवम्बर)

मरकुस 14:8 जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है।

हम मरियम की तरह जिसने प्रभु यीशु के पैरों पर इत्र उंडेला था, अपने प्रिय उद्धारकर्ता के साथ में निजी सम्पर्क में तो नहीं आ सकते, परन्तु जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा है कि यदि हम अपने भाइयों में से छोटे से छोटे के साथ भी भलाई करें या न करें तो वह हमने प्रभु यीशु के लिए किया है। इसलिए, यह हमारा विशेष अधिकार है कि हम अपने भाइयों का अभिषेक, हमारे प्रभु के भाइयों का अभिषेक--प्रेम, सहानुभूति, आनन्द, और शान्ति की मीठी खुशबु से करें। इसके लिए हमारी जीवित बलि जितनी ज्यादा कीमती होगी, हमारे बड़े भाई प्रभु यीशु के नज़र में वह उतना ही कीमती इत्र होगा। अब इस दृष्टान्त में, जो संगमरमर का पात्र है, वह हमारे हृदय का चिन्ह है। हमारे हृदय में प्रचुर मात्रा में अच्छी आशीषों, दयालुता, भलाई और सब के प्रति प्रेम की सुगंध वाला इत्र भरा होना चाहिए, और खासकर मसीह जो हमारे सिर हैं उनके प्रति प्रेम रखना है और उनके शरीर के सभी सदस्यों -- चर्च के प्रति प्रेम रखना है, और खासकर जो उनके पैर का हिस्सा है या जो भाई अभी हमारे संग दौड़ रहे हैं, उनके प्रति अपने हृदय में सुगन्धित इत्र के जैसा प्रेम, दयालुता और अच्छी आशीषों को भर के रखना है। अभी हमारे पास अवसर है कि हम अपने संग दौड़ रहे भाइयों पर प्रेम के इत्र की खुशबु उंडेल दें, प्रभु यीशु के नाम

की भक्ति में उन सब से प्रेम करें क्योंकि हम सब तो मसीह के ही हैं। `Z. '99-78`; `Z. '00-378`; R2448:5; R2744:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 नवम्बर)

भजन संहिता 91:11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।

इस वचन के अनुसार परमेश्वर कुछ वफादार शिक्षकों, अध्यक्षों को नियुक्त करेंगें जो कि हमारी देख रेख करेंगें क्योंकि उन शिक्षकों को निश्चय सारा हिसाब किताब परमेश्वर को देना होगा। यह सच है कि झुठे शिक्षक भी उठेंगें जो परमेश्वर के वचन को बिगाड़ेंगें, उनका दुरूपयोग करेंगें और हमारे को धुर्तता भरे तर्क वितर्को से भ्रष्ट करने का प्रयास करेंगें। लेकिन यदि परमेश्वर के बच्चे हृदय की सरलता में, अपने विश्वास के हर अंश के लिए ये सोचें कि यहोवा ने ये कहा है और ध्यान से सभी काम को परमेश्वर के वचन के द्वारा परखें, तो वे सच और झुठ में अंतर आसानी से कर सकेंगें। और ऐसा कर लेने के बाद, हमें हमारे प्रेरित पौलुस के इब्रानियों 13:17 वचन के द्वारा मिली सीख से और भी साहस मिलता है। हमारे प्रभु, हमारे चरवाहा, अपनी सच्ची भेड़ कि देखभाल करेंगें।

(इब्रानियों 13:17→ अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उन की तरह तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।) `Z. '04-75` R3332:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 नवम्बर)

भजन संहिता 34:7 यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उन को बचाता है।

एक मसीही जब ये महसूस करता है की - यद्यपि धरती की शक्तियां उसके विरोध में है, यद्यपि वह शैतान की युक्तियों से लड़ने के लिए बहुत ही निर्बल है, यद्यपि उसका युद्ध केवल लहू और मांस से नहीं, उसके अलावा प्रधानों से है, दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है, शैतान से है और अंधकार के हाकिमों से है - फिर भी जब एक मसीही ये महसूस करता है कि जो हमारे साथ है वो उससे जो की संसार में है, यानि कि हमारे सभी विरोधियों से बड़ा है, तो ये बात हमारे भरोसे को कितना बड़ा देती है, और हम जानते हैं की सभी स्वर्गीय स्वर्गदूत दिव्य इच्छा के वश में हैं और परमेश्वर उन्हें अपने दिव्य ज्ञान के अनुसार दिव्य कारणों के लिए नियुक्त कर सकते हैं । `Z. '97-120` R2140:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 नवम्बर)

1 थिस्सलुनीकियों 5:6 … पर जागते और सावधान रहें।

आओ हम सब जागते रहें, इसका मतलब है कि परमेश्वर के दिखाए हुए सभी रास्तों में चौकस रहें और ध्यान रखें, और हमेशा ये सोचें कि परमेश्वर को क्या अच्छा लगता है और वही करें जिसमें मेरे लिए परमपिता को सम्मान मिले। आओ, हम स्वंय को जाँचें, परखें, और सर्वदा अपने महायाजक प्रभु यीशु के पद-चिन्हों पर बारिकी से चलने का सम्पूर्ण प्रयत्न करें। आओ हम संयमी बने, मतलब चंचल न बनें। जब हम प्रसन्न हो तो परमेश्वर में आनन्दित रहें, हमें उन सभी बेचैनियों और चिन्ताओं से मुक्त रहना हैं जो पिता के चरित्र और योजना के प्रति गलतफहमियों

के कारण बहुतों में पायी जाती है। हमें परमेश्वर की सेवा से मेल रखते हुए सभी अवसरों और विशेषाधिकारों की सराहना करनी है, न कि बिना विचारे उनके प्रति बेपरवाह रहना है जिससे की ये अवसर और अधिकार हमारे हाथों से फ़िसल जाएँ और बाद में हम पछ्ताएँ। `Z. '02-239` R3056:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 नवम्बर)

2 पतरस 1:10 यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे।

यदि हम ऐसा करेंगे तो ठोकर न खाएंगे - इसकी सम्भावना इन सब कार्यों को अच्छी तरह से करने में नहीं है। बल्कि, इसके बावजूद की मसीह की धार्मिकता हमारे सभी अपराधों को ढक देती है और वे प्रतिदिन हमारी कमजोरियों में मदद करते हैं। यदि हम मसीह की धार्मिकता में विश्वास रखते हैं, और अपनी क्षमता के अनुसार इनके सभी अनुग्रहों को उत्पन्न करते हैं, तब अवश्य है कि हम ठोकर नहीं खाएंगे। जब हम सब कुछ जो हमसे हो सकता है कर चुके हों, तब भी हम केवल निकम्मे दास ही हैं, हमें कभी भी खुद पर भरोसा करने की हिम्मत नहीं करनी है, न ही अपनी धार्मिकता पर भरोसा करना है, बल्कि हमेशा प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता की बहुत ही बड़ी चादर जो मसीह पर विश्वास में हमें मिली है, उसी पर भरोसा करना है। और हमें दृढ़ परिश्रम के साथ अपने उद्धार को डरते और काँपते हुए पूरा करना है। और ये जानना है कि मसीह की धार्मिकता केवल उन्हीं लोगों पर लागू होती है जो पापों का त्याग करने की तमन्ना रखते हैं और उस पवित्रता की ओर प्रयत्न करते हैं जिसके बिना कोई मनुष्य परमेश्वर को नहीं देख सकता। `Z. '97-148` R2155:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 नवम्बर)

याकूब 1:2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो।

बिना किसी संदेह के, हम सब अक्सर यह चाहतें हैं कि सभी परीक्षाएँ खत्म हो जाएँ और हम जय पाने वालों की गिनती में स्वीकार कर लिए जाएँ। लेकिन धीरज और विश्वास और भरोसे को हमारे हृदयों को बारिकी से शुद्ध करने का कार्य करना है, हमें नरम करके परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनने का इच्छुक बनाना है। आइये इस अच्छे कार्य को हमारे में होने दें। आइये हम आनन्दित हों, जब हमारी परीक्षाएँ हमारे लिए किसी भी प्रकार का कोई सबक लेकर आए, जो कि हमारे लाभ के लिए है, जिसके द्वारा हमारे चरित्र निर्माण में सहायता मिलती है और हमारा चरित्र ढृढ़ या मजबूत होता है, सच्चाई और धार्मिकता के लिए और भी ढृढ़ होता है, हमें हमारी कमियों या कमज़ोरियों से और भी ज्यादा अवगत कराता है और हमें उनके प्रति और भी ज्यादा सावधान कर देता है। यहाँ तक कि वे संघर्ष जिसमें हमें आंशिक विजय मिलती है, वे भी हमारे लिए लाभदायक हैं ... यहाँ तक कि वे क्षण भी जब हम पूरी तरह से हार जाते हैं, उसका परिणाम हमारे चरित्र की मजबूती हो सकता है, उस दिशा में फिर से और ज्यादा जोश के साथ, पक्के इरादों का शुद्धिकरण (क्रिस्टलीकरण) हो सकता है और प्रार्थना में परमेश्वर के सामने हमें विनम्र बना सकता है। `Z. '02-133` R3001:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 नवम्बर)

भजन संहिता **69:9 क्योंकि मैं तेरे भवन की धुन में जलते जलते भस्म हुआ।**

ठण्डापन मनुष्यों के नजरिए से एक अच्छा गुण हो सकता है, लेकिन जिन्होंने ये चख लिया है की परमेश्वर दयालु हैं उनके लिए न तो ठण्डापन और न ही गुनगुने होने के लिए कोई जगह है। इसके लिए प्रेम की उत्तेजना को पूरी तरह से हावी होकर उनके जोश को प्रतिदिन बढ़ाते जाना चाहिए। हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रेम भी ऐसा ही था, की वे प्रेम की धुन में भस्म होने को भी तैयार थे और यही कारण था की वे परमेश्वर पिता के इतने चहेते थे। इसलिए हममें से हर एक, जिसके अंदर पिता का मनभावना बनने की चाहत है, उन्हें उसी जोश की आत्मा से परिपूर्ण होना होगा, जो प्रभु यीशु मसीह में थी। हमारे अंदर धार्मिकता और सच्चाई के लिए जोश होना चाहिए, इतनी धुन की वह हमें परमेश्वर की वेदी के सामने पूरी तरह से जलाकर बलिदान कर दे। ऐसे लोग सबसे अधिक मनभावने होंगे परमेश्वर की नजर में और उन्हें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर अवश्य ग्रहण करेंगे। `Z.'98-112` R2289:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 नवम्बर)

इब्रानियों 10:36 क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

यहाँ पर हम यह देखते हैं कि हमारे लिए केवल परमेश्वर की मर्जी करने की ही परिक्षा नहीं है, बल्कि उसके बाद, उस निशाने तक पहुँचने पर हृदय में हमें इस चरित्र का चिन्ह बना लेना है, और हमारे मनों में (अगर शरीर में केवल आंशिक रूप

से भी) हमें धीरज के साथ सहते हुए परमेश्वर की धार्मिक इच्छा को अपने ह्रदय का कानून बनाकर स्थापित करना है, जो की सभी परिस्थितियों और स्थितियों के तहत हमारे लिए जीने का नियम बन जाना चाहिए । इसलिए, जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे, हमारा ह्रदय परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं होगा। प्रेरित याकूब कहते हैं - विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है, मतलब यदि हमारा विश्वास परीक्षा में स्थिर रहे तो वह धीरज के साथ सहने के चरित्र को हममें उत्पन्न करेगा । दूसरी और, यदि हमारा विश्वास धीरज को उत्पन्न न करे, तो इसका मतलब है की हमारा विश्वास सन्तुष्ट रूप से परीक्षा में खरा नहीं उतरा है, और हम परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं बने हैं । `Z. '01-117` R2792:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 नवम्बर)

प्रेरितों के काम 24:16 इस से मैं आप भी यतन करता हूं, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।

जैसे हमारे गिरे हुए स्वाभाव के दुसरे लक्षणों को नियंत्रण में करना पड़ता है, वैसे ही हमारे विवेक को भी नियंत्रण में रखने की जरूरत होती है। यदि हमें अपने विवेक को नियंत्रण में रखना है तो यह जरूरी है कि कुछ आदर्श या मापदण्ड हो जिनके द्वारा हम अपने विवेक को नियंत्रित करें। हमारा विवेक एक ऐसी घड़ी की तरह है जिसके चेहरे पर घंटे की सुई ठीक - ठीक बनी हुई है लेकिन वो घड़ी एकदम सही समय दिखाए ये बात उस घड़ी के मुख्य यन्त्र के सही रीती से नियंत्रण करने पर निर्भर करती है। तभी ये घड़ी समय के हर घण्टे को ठीक ठीक दिखा पाएगी। इसी तरह हमारा विवेक भी हमें सही या गलत बताने के लिए तैयार है, लेकिन हम अपने विवेक पर निर्भर तभी कर सकते हैं जब हमें ये निश्चय हो जाए की वो सचमुच सही है, और ऐसा तभी संभव है जब हमारे विवेक का नियंत्रण हमारी नई सृष्टि के मन

के हाथों में हो जिसके द्वारा हमारा विवेक पूरी तरह से प्यार के कानून के साथ तालमेल में रहे, जिसे हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा प्रस्तुत किया गया है । `Z. '00-360` R2735:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 नवम्बर)

याकूब 1:13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

जो प्रलोभनों को परमेश्वर सही समझते हैं उनमें और जो प्रलोभन या लालच, शैतान की और से आते हैं, उनमे अंतर है। इन दो में से पहला परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा या ईमानदारी या वफादारी को जांचता है, और धार्मिकता के सिद्धांतों के प्रति हमारी वफादारी को जांचता है और इन परिक्षाओं का उदेश्य आशीषें देना होता है और जो भी इन परीक्षाओं का सामना कर रहे होते हैं, उनकी मदद करना होता है, और इस प्रकार से वे धार्मिकता के प्रति अपनी वफादारी को दिखाते हैं। इसके विपरीत, शैतान से आनेवाले प्रलोभन या लालच या जांच बुराई के स्वभाव से छुपे हुए फंदे की तरह होते हैं जो की गलत कार्यों को उत्पन्न करते हैं, हमें ऐसे लालच देने की कोशिश करते हैं जिससे की गलत भी सही दिखने लगे, सही भी गलत दिखने लगे, अंधकार को रोशनी बना देते हैं और रोशनी को अंधकार बना देते हैं। बुराई के इस अर्थ और झूठी प्रस्तुति और फंदे मैं डालनेवाली परीक्षा के तात्पर्य से, परमेश्वर किसी मनुष्य को नहीं जांचते हैं । `Z. '04-7` R3297:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 नवम्बर)

निर्गमन 4:2 यहोवा ने उससे कहा, तेरे हाथ में वह क्या है?

यदि कोई मनुष्य बहुत अधिक मात्रा में काम में लिया जाना चाहता है, ताकि वह परमेश्वर की धन्य सेवा में कार्य कर सके तो उसे पहले इस सेवा के कार्य के लिए ज्यादा से ज्यादा योग्य बनने का प्रयास करना चाहिए। उसे परमेश्वर के आदरणीय और प्रिय दास मूसा की नक़ल करनी चाहिए - नम्रता में, दीनता में, ऊर्जा में, जोश में, कभी न थकने वाले जोश में, और परमेश्वर के लिए स्वंय को बलिदान कर देने वाली सेवा में। लेकिन जो बुद्धिमान भंडारी होगा वो हमेशा ये प्रयत्न करेगा कि, उसकी उन्नति स्वाभाविक क्षमताओं या प्रतिभाओं में हो, और परमेश्वर से अपनी प्रगति के लिए किसी चमत्कार की उम्मीद नहीं करेगा और जो बुद्धिमान होगा वह अपना बहुमूल्य समय उस गुण को बढ़ाने में व्यर्थ नहीं करेगा जो स्वाभाविक तौर से उसके पास है ही नहीं । Z ’94-143, R1651:5 इसलिए, आओ हममें से हर एक परमेश्वर के लिए और उनके कारणों के लिए विनम्रता, जोश और प्रेम के द्वारा, और परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास के द्वारा ये कोशिश करें, कि हमारा हृदय और मन उस अवस्था में आ जाये जिसमें, कि हम परमेश्वर के कार्यों में काम आने के योग्य बन जाएँ। और हमारा ये बदला हुआ हृदय और मन दिव्य सेवा के किसी भी विभाग में उपयोग में आ जाये जिसके लिए परमेश्वर हमें बुलाने में प्रसन्न हों। `Z. '01-348` R2904:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 नवम्बर)

इफिसियों 6:18 और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार बिनती किया करो।

हमारे अंदर हम जो भी कुछ करें और कहें, उन सब में प्रार्थना की आत्मा होनी चाहिए। कहने का ये मतलब है कि, हमारे जीवन से सम्बंधित सभी मामलों के लिए हमारा मन या हृदय लगातार परमेश्वर से मार्गदर्शन लेने के लिए जुड़ा होना चाहिए। ताकि हमारे हाथों से जो भी हो सकता है वो सब हम अपनी पूरी सामर्थ्य से इस तरह करें कि, वह परमेश्वर के ग्रहणयोग्य हो। और हमें उनके द्वारा सभी प्रलोभनों से सुरक्षा मिल जाये, अन्यथा वे प्रलोभन हमारी सहनशक्ति के बाहर हो जाएंगे। और आखिरकार हमें बुराई से छुटकारा मिल जाये और हमें हमारे प्रभु के राज्य में जगह मिल जाये। भाइयों और बहनों, आओ हम ज्यादा से ज्यादा इस बात को याद रखें जो हमारे प्रभु ने कही है - 'जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परिक्षा में न पड़ो' (मरकुस 14:38) `Z. '01-80` R2775:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 नवम्बर)

अय्यूब 34:29 जब परमेश्वर शान्ति दे तो कौन परेशानी में डाल सकता है?

समुद्र में आये तूफ़ान की तरह आत्मा पर बढे हुए कोलाहल के बीच में कौन शान्ति दे सकता है? केवल वही जो सभी सुविधाओं का परमेश्वर है। जोखिम में पड़े समुद्री नौसैनिकों की तरह, जब हम उन्हें पुकारते हैं, तो वही हमें "परमेश्वर में स्थिरता और शान्ति" के मनभावने आश्रय - धन्य बंदरगाह के निकट खींचते हैं। वह कौन सी याचना है जो इस शान्ति के जवाब को लाती है? यह वह प्रार्थना नहीं है जिससे की अशान्ति के सभी अवसरों को हटाया जाए, क्योंकि इस तरह से मनुष्य की आत्मा को शान्ति देना ही हमेशा दिव्य इच्छा नहीं होती है -- क्योंकि हमेशा यह उत्तम तरीका नहीं होता है। लेकिन एक ऐसी याचना है, जो स्थिरता लाने में कभी असफल नहीं होती है और उस शान्ति में हमें परेशानी में कोई भी नहीं डाल सकता है। यह

एक ऐसी प्रार्थना है जिसमे हम परमेश्वर की इच्छा में एक मीठी, भरोसेवाली और प्यारी सांझेदारी करते हैं - "हे परमेश्वर, मेरी नहीं, पर आपकी इच्छा पूरी हो; काश आपकी इच्छा और मेरी इच्छा एक हो; में शान्ति मांगता हूँ -पर जरूरी है कि यह शान्ति, हे परमेश्वर, आपके साथ एक होकर मिलें"। `Z. '96-259` R2058:3 आमीन।

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 नवम्बर)

इब्रानियों 10:23 और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है।

हमारी सभी आशा, जिन्हें हम रचते हैं, चाहे चरित्र के लिए या आनेवाली महिमा के लिए, उनकी नींव परमेश्वर के वादे हैं। आइये हम इस सच्चाई के लिए एक ईनाम रखें ताकि हम किसी भी मायने या अंश में सच्चाई से समझौता नहीं करें, आइये हम सच्चाई को केवल मुँह के बोल से न पकड़ें, बल्कि आत्मा में जगह दे-सच्चाई से प्रेम करें, क्योंकि ये खरी है, असली है, सही है, और इसके साथ-साथ बहुत ही सुन्दर और भव्य है। आइये, हम धीरज से सहते रहने की अहमियत को हमेशा याद रखें, ताकि हम न केवल मसीही अनुग्रहों को उत्पन्न कर पाएँ और उनका अभ्यास कर पाएँ, बल्कि हम सभी परीक्षाओं, परेशानियों, ताड़नाओं जिन्हें हमारे परमेश्वर उचित समझकर हम पर आने की अनुमति देते हैं, उनको आनन्दपूर्वक ग्रहण करें क्योंकि यह सब हमें जांचने के लिए और हमारे चरित्र की उन्नति के लिए है, जिनके बारे में हमें हमारे प्रभु ने बताया है कि इसका प्रमुख महत्व है और इनके बिना न तो परिपूर्ण प्रेम प्राप्त किया जा सकता है और न ही बनाया रखा जा सकता है या बरकरार रखा जा सकता है। `Z. '01-119` R2793:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 नवम्बर)

मत्ती 28: 20 …और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥

निश्चय वह जो बोने में सावधानी से देखभाल कर रहा था, वह कटनी के समय कम सावधान या अरुचि रखनेवाला नहीं है। इसलिए आओ हम सच्चाई के हँसुआ पर भरोसा रखें, पूरे उत्साह और हौसले के साथ, ये याद रखते हुए कि हम प्रभु मसीह की सेवा करते हैं, ये याद करते हुए की हम 'कटनी 'के लिए जिम्मेवार नहीं हैं पर सिर्फ हमारी ऊर्जा के लिए ताकि हमें जो भी पका हुआ गेहूँ मिले उसे इकट्ठा कर सकें। यदि हमें थोड़े से पके दानों को खोजने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़े तो हम जिन्हें खोज पाएँ उनमें ज्यादा आनन्दित होना चाहिए, और जो दुर्लभ और बहुमूल्य हैं उनसे प्रेम करना और उनकी कदर करनी सीखना चाहिए। आइये हम ये भी याद रखें की यद्धपि हम अपना सारा ज्ञान इस सेवा में लगा सकते हैं (पके गेहूँ खोजने के कार्य में), लेकिन हमारे प्रभु यीशु का उदेश्य उनके कार्य में हम कितना हिस्सा पूरा करते हैं (कितने पके गेहूँ खोजते हैं) उसका हिसाब लेना नहीं है बल्कि हम एक पके गेहूँ को खोजने के लिए कितनी मेहनत करते हैं, उससे मिलने वाली आशीष है। `Z. '01-155` R2811:4 आमीन